लेखक-परिचय :

नाम : अनंत कुमार सिंह

जनम-तिथि : 7.1.1953

जनम-अस्थान : बहेराकला, पो०-फड़ी (आमस) गया

पेसा : बैंक करमचारी

इनकर पाँचगो हिन्दी कहानी संगरह परकासित भेल हे।

1. चौराहे पर, 2. और लातुर गुम हो गया, 3. राग–भैरवी, 4. तुम्हारी तस्वीर नहीं है यह। 5. कठफोड़वा।

'कुँअर सिंह और 1857' भी इनकर एगो चर्चित पुस्तक हे।

ई हिन्दी पतरिका 'जनपथ' के सम्पादक हथ। ई अभी सेन्ट्रल कॉ–ऑपरेटिव बैंक, आरा में कार्यरत हथ।

समकालीन कहानी में इनकर नाम आदर के साथ लेवल जा हे।

'सनेह के आँधी' कहानी में गाँव में रहेवाला मजदूर के बरनन भेल हे। बिहार से दूसर राज्य में काम खोजे के वास्ते मजूर पलायन कर गेलन हे उनकर गाथा पर अधारित हे ई कहानी। दलाल लोग ओकरा रोजी–रोटी आउ समरीद्धि के सब्ज–बाग देखा के कलकत्ता, पंजाब, हरियाना, दिल्ली ले जा हे। बाद में ऊ बेमार होके गाँव लउटऽ हे। ओन्ने दलाल के मकान कमीसन के पइसा से पक्का छत हो जा हे। आपस में मजदूर के बीच कलह बढ़ऽ हे जेकर चलते तकरार हो जा हे। अंत में मजदूर वर्ग में मिल्लत हो जा हे।

सनेह के आँधी

आज फिन अप्पन गाँव भुइयाँ के घरे–घर घूम लेलक जगन, तइयो ओकर उदासी में कमी न आयल। खने ई पटी जाय खनो ऊ पटी। बुधन, चरित्तर, बिगन, मुरारी–सबके सब मुँह फेर के किनारा पकड़ लेलन। जे जगन खुसामद खोजऽ हल, अब ऊ मुँह जोहले चलइत हे। कोई ओकर बात सुनते न हथ। सबके मुँह से

किरपाल के नाम आवइत है–उहे मना कयले है सबके। किरपाल.... किरपाल...किरपाल... ! का है आखिर किरपाल? सबके भाग विधाता है का? ऊ कोई शेर है, जेकर एक बोली पर सब गुमसुम हो गेलन है?

हुँह, हम रोजी–रोटी देवइत ही, सहर घुमाके नौकरी दिलावइत ही, कड़कड़ नोट दिलावइत ही, हमहीं सबके आँख खोलली आउ हम्मर बात के कोई असर न ! आउ ऊ लखैरा जेकरा न खाय के ठिकान है न पिये के, उहे सिरताज हो गेल ! दस–बीस बुड़बक ओकर हुँकारी भरे वाला मिल गेलन है आउ एकरे में ऊ नवाब हो गेल ! अब चाहे हम चाहे ऊ किरपलवा।

चक्कर लगयते थक गेल जगन आउ टोला के पुरुब वाला पीपर के नीचे मन मारले बइठ गेल। का जवाब देत ऊ सरमा जी के? ऊ पचास मजूर लावे ला कहलन हल। हम तो एतना हाँक देली हल कि ऊ आँख मूँद के दु हजार पेसगी दे देलन हल ओहनी के भाड़ा बुतात खातिर आउ ऊपर से पान–सौ हम्मर खरचा पानी खातिर। का जवाब देम हम? कइसे मुँह देखायम? इहाँ तो एक्को अदमी तइयार न होइत हथ। गाँव–इलाका सब जगह इहे हाल है। अब तो हम्मर एतना पुराना साख मट्टी में मिल जायत, रोजी खतम हो जायत हम्मर। सबके जड़ किरपलवा है।

'इहाँ अकेले बइठल का करइत हें हो जगन भइया!' रामजी आके बोललक।

'अइसहीं' बइठल ही। सोचित ही लोग के बुड़बकइ, सब कुइयाँ के बेंगे रह जयतन।'

'हँ–हो! ठीके कहइत हें। तूँ सबके भलाई करऽ हे आउ जरंत लोग तोरा बिगाड़े पर लगल हथ।'

'अरे, हम्मर का बिगड़त? तबाह होयतन ओहनी, अन्न बिना तरसतन। गढ़ल घास मिलला पर फुटानी सूझबे करऽ हे रामजी। इहाँ के लोग के हम कइसे समझाउँ कि किरपलवा तोहनी से दुस्मनी करइत हउ। गिरहथ लोग से जरूर ओकरा घूस मिलल है, तबे ऊ मजूर के इहाँ से जाये न देइत है।'

'जगन भइया! गिरहथ लोग भी ओकरा देखेला न चाहय। रोज–रोज मजूर के बहका के मजूरी बढ़ावइत रहऽ हे ऊ।'

'अरे ऊ का बढ़ावत मजूरी ! सब मजूर के तबाह कर देत। जानऽ हऽ रामजी! ई कोई नया बात न हे, गरीब के बैरी गरीबे होवऽ हे। गरीबे में से कुछ दलाल पैदा हो जा हथ जे अप्पन सवारथ खातिर सबके तबाह करऽ हथ। इहे सब चलते गरीब के हालत दिनो-दिन बिगड़ल जाइत हे।'

'हइये हे भइया! तूहीं तो सबके अँखफोड़ कयलऽ, घोंघा के मुँह खोललऽ। गरीब लोग के कलकत्ता, दिल्ली, पंजाब, हरियाना भेजवयलऽ। उहाँ जाय से केत्ता के दिन फिर गेल।'

हँ हो! उहे तो कहित ही हम। आउ अब लोग के कहित ही जायला तो आदर-खुसामद खोजित हथ। ऊ न जयतन तऽ हमरा का बिगाड़तन? हमरा का होयत? ऊ कमा के हमरे देतन हल का ?'

'तोरा दलाली मिलऽ हवऽ न? उहे कमाई से तूँ पक्का में रहित हऽ, चिक्कन खाइत हऽ'-बिफन का जनि कन्ने से तो आ गेल।

'आँख लगइत हउ तोहनी के नऽ? अरे! हम का चोरी करित ही, डाका डालित ही?'—जगन खिसिया गेल।

'तूँ तो हत्यारा के काम करित हें, गाँव-समाज के जड़ कोड़ित हें।' बिफन बिफर गेल।

'देख बिफना! तूँ चुप रह! तोरा से हम बोलइत न हिअउ। तूँ किरपलवा के बेलचा हें, तोहनी गरीब के पेट पर लात मारे वाला हें।'

'वाह-वाह! लाजो न लगइत हउ तोरा.....करन के औलाद? तूँ तो दान देवे वाला हें न सबके? अरे हत्यारा, तूँ तो इहाँ के बीस मजूर के भेजले, जेकरा में बारह गो बेमरिया होके गाँव में बइठ गेलन। बोल, बइठलन कि न? दया आवऽ हउ तोरा? अरे ओहनी में केकरो टी. बी. होयल है, केकरो मलेरिया, तऽ केकरो फलेरिया। पूरा इलाका के तूँ रोगिआह बना देले आउ अपने मौज-मस्ती करित हें। एन्ने गाँव इलाका के खेत परती रहित हे।'

'बड़ा मोह लगइत हउ तोरा! खेत के मालिक गिरहथ लोग तोर अप्पन हो गेलथू का?'

'गिरहथ आउ मालिक के काम हम मंगनी करऽ ही? रोख मजूरी चोख काम। हमनी केकरो जगीर में न ही, काम करम आउ दाम लेम।'

'कुछ उपरी भी मिलते होतउ, तबे तो ओहनी खातिर बोलइत हें?'

'अरे निर्लज! तोरा हया गरान न हउ? बहस न कर अब। दफा होजो इहाँ से! अब तोर चाल न चलतउ। ई गाँव के एक मजूर भी न जतथुन बाहर। इलाका के मजूर से पूछ के अजमाइये लेले हे तूँ। भाग इहाँ से तूँ अब!'

'तूहीं अयले हें भगावे वाला?' गरजे लगल जगन आउ लपकले अप्पन घर दन्ने-बढ़ गेल।

तनिये देर में ऊ अप्पन घर से बाहर आ गेल। ओकर हाथ में चुपका बंदूक हल, ताव में डोलइत हल ऊ।

तबतक गाँव में गोहार हो गेल। बंदूक लेके जइसहीं ऊ अप्पन घर से बाहर निकलल, ओकर आँख फट गेल, सरीर काँपे लगल, देह से पसीना छूट गेल। टोला के मरदे-मेहरारू सबके सब ओकर घर घेर लेलन हल। केकरो हाथ में लाठी हल तऽ केकरो हाथ में भाला-गड़ाँसा। सबसे आगे किरपाल आउ बिफन हलन। रामजी का जनि कन्ने तो लुका गेल हल। कोई ओकरा दन्ने न गेल।

''चोरी आउ सीनाजोरी ! एक तो तूँ गाँव-इलाका' के मजूर के तबाह कर देले, फसल के चौपट कर देले आउ ऊपर से बंदूक देखावइत हे।' किरपाल बोललक।

'सुन ले जगन! समाज के सामने एक मौका देइत हिअउ तोरा। तूँ अप्पन खैर चाहित हें तो अप्पन धंधा छोड़ दे आउ हमनी के साथे काम कर! हमनी नियन रह, न तो ई घर हमनी के हो जतउ आउ तोर माथा छील के गाँव से भगा देबउ।' बिफन बोललक।

'बंदूक के सान मत देखाव! ई भीड़ से जादे सक्ति न हउ बंदूक के।' किरपाल के ई बात सुनते जगन अप्पन हाथ के बंदूक फेंक देलक आउ हाथ जोड़ के खड़ा हो गेल। ओकर देह काँपित हल आउ आँख में लोर डबडबा गेल हल। लाज से पिअर हो गेल हल ऊ।

'आज से हम अप्पन समाज के साथे रहम। अप्पन सवारथ खातिर गरीब के जीवन बरबाद न करम। हम जे कइली ओकरा खातिर माफी चाहित ही समाज से।'

बोलते-बोलते पसीज गेल जगन। ओकर बात खतम भी न होयल हल कि भीड़ से जयकारी होवे लगल। सब के चेहरा पर खुसी समा गेल।

थोड़ा देरी पहिले भीड़ से जहर के हवा बहइत हल—अब प्यार आउ सनेह के आँधी बहे लगल।

अभ्यास-प्रश्न

मौखिक :

1. केकर बोली सुनके सब कोई गुमसुम हो गेलन?
2. जहर के हवा कउन बहावइत हल?
3. दलाली के कमाई से कउन पक्का मकान में रहइत हल?

लिखित:

1. मजूर न मिलला पर जगन खिसिया के का-का बोललक? विस्तार से लिखऽ।
2. 'गरीब के बैरी गरीबे होवऽ हे।' ई बात के मतलब समझा के लिखऽ।
3. जगन मजूर लोग के मजूरी करे ला कहाँ-कहाँ भेजऽ हल?
4. बाहर जाके काम करे ओलन मजूर कउन-कउन रोग से बेमार होके लउटऽ हलन?
5. जगन के घर के बाहर लोग के भीड़ काहेला लगल हल? विस्तार से बतावऽ।
6. 'जहर के हवा' से 'सनेह के आँधी' तक के सफर संछेप में लिखल जाय।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल के समास बतावऽ :

   मरदे-मेहरारू, चोख काम, अँखफोड़, बीस मजूर, रोजी-रोटी।

2. पाठ में आयल इहाँ एगो सहचर सबद के उदाहरन देल जाइत हे, एकरा अलावे पाँच गो तू चुन के लिखऽ :

(क) गाँव-इलाका, मौज-मस्ती (ख) ....

(ग) .... (घ) ....

(च) .... (छ) ....

3. विफन ला जउन जउन विसेसन के परयोग भेल है, चुन के पाँच गो विसेसन लिखऽ।

4. नीचे लिखल के सप्रसंग व्याख्या करऽ :

(क) चोरी आउ सीनाजोरी ? एक तो तूँ गाँव-इलाका के मजूर के तबाह कर देले, फसल के चौपट कर देले आउ ऊपर से बन्दूक देखावइत हे।

(ख) थोड़ी देर पहिले भीड़ से जहर के हवा बहइत हल-अब प्यार आउ सनेह के आँधी बहे लगल।

5. नीचे लिखल मुहावरा/कहाउत के वाक्य में परयोग करके अरथ स्पस्ट करऽ :

(क) आँख फट गेल

(ख) चोरी आउ सीनाजोरी?

(ग) जड़ कोड़ना

(घ) पेट पर लात मारना

(ङ) रोख मजूरी चोख काम

(च) हुँकारी भरना

(छ) मट्टी में मिल गेल

(ज) कुइयाँ के बेंग

(झ) घोघा के मुँह खुलना

(च) दिन फिरना

योग्यता-विस्तार :

1. 'लोग बिहार छोड़ के बाहर कमायेला न जाय' एकरा पर एगो विचार-गोष्ठी रखऽ।

2. अपन मित्र के पास एगो चिट्ठी लिखऽ जेकरा में मजूर के सोसन के बारे में लिखऽ।

3. 'सोसन आउ संगठन' पर एगो संछेप में निबंध लिखऽ।

सब्दार्थ :

खुसामद	:	झूठा बड़ाई
गुमसुम	:	चुपचाप, सांत
लखैरा	:	लोफर
सिरताज	:	परमुख
पेसगी	:	बेआना
साख	:	नाम, प्रतिस्ठा
रोजी	:	रोजगार
जरंत	:	देख के जरेओला